

# श्री जैनधर्मप्रकाश

JAIN DHARMA PRAKASH.

पुस्तक ६ हुं पैस शुटि. १५ संवत् १९४७. अंक. १०मे।

मालिनी

मशम रस निमग्नं, दृष्टियुग्मं प्रसन्नं;  
बदन कमल मंकः कामिनीं सग शून्यः  
कर युगमपि यसे, शस्त्र संवध वैध्यं  
तदसि जगाति देवो, वीतराग स्त्वमेव ॥१॥

प्रगट कर्ता

श्री जैनधर्मप्रसारक सभा  
भावनगर.

अमदाबादमां.

“ये लोके वनीक्षुलर भान्दींग प्रेसभां”  
२१० नथुक्काई रतनचहड ७१८८ भसिङ्कु इर्हु  
१८१२. सन १८६०

भूल वर्ष १ नो ३१-०-० अमाउथी पेरिटेन ३०-३-० लू६  
भुडुक अंक एकना ३०-२-०

## अनुक्रमणिका.

### विषय

१. प्रश्नोत्तर (लघुनार भुताराज श्रीभात्मारामल)	१४८
अन्यं कारिलहा.	१४५
आजाए धर्म.	१४३
लाल.	१४५
	१४६

### भास मूर्च्छना.

ज्ञानतु अहु भान ज्ञानापरणी कर्मना क्षय करे छे अने ज्ञाननी आसातनाथी ज्ञानापरणी कर्म वर्द्धाय छे भाटे. चापानीआने रथडतु न भेजतां उच्चे आसने भुक्तु अने आवां लक्षपुर्वक वांची यथारक्ति धर्म कर्यामां प्रवर्त्ततुः.

### आहडोने चेतवणी.

जे आहडोतु लवाज्जम नदीं आवेलुः तेखनी उग्रह अह लभी गोट्ठ घर्य कोँछे तो लुके बीन नित्ये लवाज्जम भाकलापतुः. लवाज्जम भेडक्काना स आहडोने सेई तरुते जे युक्त आ वर्षमां चापारानी छे रुपेह साल भेड लवाज्जम भेडक्काना भानी शक्ये नही. अभारा परदेशना ऐज्यानां ताम नीचे प्रभाणे.

श्री वडादरा—जुषीरी, चुरुपचंद वेणीदास, भुलतानपदः,  
,, वेध अगनलाल चुनीलास सुलतानपदः.  
श्री अंडवी, कर्त्तु—शा. जेवंत वीजपार, ड. आभा अज्जर,  
श्री भुज, कर्त्तु—शा. देवसोलाई हीमयादः.

श्री वेरापण,—शोळ, गणेश वेलालः.

श्री पोचपचंद.—रोड, देवकरेणु अवेदचंदः.

श्री अडनगर, भाणवा—शा. नथुलाई नागारी.

श्री जगिगाम, आनदेश—शा. रामचंद ल्लवराजः.

श्री चुरत—शा० इत्यालाई चुरुपचंद नाणापदः.

श्री भुजधु—शा० नीलेवन लौण्णल शा० रतनल वीरलनी

इक्की अहुरडोहु छीपीयाली

# श्री जैनधर्म प्रकाश.

JAIN DHARMA PRAKASH.

दालहरे।

धर्मा नां वगडतां, भरवर याय आकाश;  
तेग भूतण गंगवतु, प्रगटयुं जैनप्रकाश। १

प्रसन्नकुमुख १८१२. ऐप शुद्धि १५. संभात १६४७. अंड १०८०.

## प्रश्नोत्तर.

शनेक गुण संपन्न श्रीमन्महाराज श्री आत्मारामजी  
(आनंदविजयजी) ए वंगाळानी एशीयाटीक  
सोसैटीना सेक्रेटरी डाक्टर होर्नलना  
प्रश्नोन्न आपेला उच्चरो.

जैनभत वृक्षना संग्रहमां डाक्टर होर्नले पुछेक्का प्रश्नोभाष्यी इश प्रश्नो  
डतर साथे गया आंडमां दाखल कर्या छे लार पछीना प्रश्नो डतर साथे  
आ तीव्रे दाखल कर्या छे.

११ प्रश्न—४४ वें ज्याएं तपगच्छ हेतु आचार्यका नाम “व्य-  
वंद” विष्णुषे परतु तपयौच्छ पदावली ने भेर प्रसिद्धे उसमै “व्यवंद”  
हुनि नाम लिखता

१४६

## श्री कैलाशर्म प्रकाश।

उत्तर—तपत्यगच्छ हेतु जगच्चर्याद् सूरि यह सत्यहैं और वृक्षमें जो नन्यत्याग्र किया है सो लेखक होते हैं।

३२ प्रश्न—सार आर्थिकदेव ये नैतिक दिनहैं। १ ‘संभागदीन’ उच्चस्थापत्-भरागदीन के लक्ष्य भौतिक दिव्य प्राणत्व ये नाम इसे भावुक हुए हैं किसी पुराणमें दिये हुए हैं और वट्टिसदिव्य वात के विषयमें २० थीत हैं।

उत्तर—आरों आर्थ वेदों नाम गायार द्वितीय नाम अथमें लिये हैं, और ये आरों वेदोंमें क्या आविष्य या सो भुवासा मेरे देखनेमें नहीं आया है, परंतु आवस्यक सूत्रकि ‘नीयुक्तिमें’ ऐसा लिखा है कि आरों आर्थ वेद व्यवच्छेद होगयेहैं।

१३ प्रश्न—२३ वें आंकड़े लिखा है कि यौध भतकी उत्पत्तिका ढाल गान सूर्योदय नाटक के आंतर्गत है, सो नाटक उमड़ भिन्न शक्ताहै कि नहीं जो भिन्न शक्ते तो कृष्ण करके मेरे वास्ते लिखवा दीज्ये।

उत्तर—गान सूर्योदय नाटक उमने आपके वास्ते लिखवानेको भेजा है, सो आपसे आपड़ों जेन देवेंगे, यह नाटक दिगंबराचार्य कृतहै।

१४ प्रश्न—उपदेश गच्छके पर वें आंकड़े यह लिखाहै कि “श्री कृष्ण सृष्टिने हेमाचार्य कुमारपाण कहत नेग कियाहीन सुखुगच्छसें बाहिरकरादा” ईनका अर्थ में नहीं समझताहूँ, कियाहीन ‘क्रान्त’ कहा जाता है, और हेमाचार्य जो भावुक प्रभिद, व्याधगुण कर्ता और कुमारपाण प्रतिशेषधक दूआदे सोचीदे वा दूसरा?

उत्तर—“कक्षसूरि निसने हेमाचार्य कुमारपाणके कहनेमें कियाहीन साधुओंको गच्छसें बाहिर कराए” ऐसा लेख पर वें आंकड़े आहीये, और आपने जो किया सो लेखककी गवती होनेमें ऐसा किया गया है सो कुधारलेना, और कियाहीन इनको कहतेहैं कि जो जैनगतके साधुओंकी रीतिसें विपरित होने, तथा हेमाचार्यका जो आपने किया ‘सोहीहै,’ हुसरा नहीं।

१५ प्रश्न—उपदेशगच्छ के ६५वें आंकड़े लिखा है कि श्री कक्षसूरि “गच्छप्रणाध” नाम अंथका कर्ता है, सो अंथ उमड़ भिन्न शक्ताहै वा नहीं?

उत्तर—“गच्छप्रणाध,” ईस नामक अंथ आज तक हमारे देखनेमें नहीं आया है।

१६ प्रश्न—जैनगत वृक्षके १५ वें आंकड़े ऐसा लिखा है कि “वीरा-

## प्रश्नोत्तर.

१४७

८. ६९६. हुंडीका पुष्पाचार्य तिसके साथ साडे नव पूर्वका व्यवच्छेद “ईति. ईसकोमें नहीं समझताहूँ. सो आचार्य डानका शिष्य हुआहै? पुनरपि हसरी लभद किजाए दि “आर्य गक्षितके साथ दशांपर्व व्यवच्छेद होनाहै: ” तेहेह पुष्पाचार्य का यथ आठ नव पूर्व ईसे व्यवच्छेद हो शकताहै?

**उत्तर—**हुंडीका पुष्प ईस नामक आचार्य श्री आर्यरक्षित सुरिका शिष्य था. और आर्यरक्षित स्वभाव के पाछे साडे नव पूर्व रहेये. दूसरी पूर्व संपूर्णी नहीं रहेमें असा इहेमें आताहै, कि श्री आर्यरक्षित स्वभावी के साथ दशमा पूर्वव्यवच्छेद होगया. तैसेही श्री हुंडीका पुष्प नामा आचार्यके साथ साडे नव पूर्व व्यवच्छेद होगये आर्थात् उनके पिछे साडे नव पूर्व नहीं रहे किंतु उनमें त्यून रहे. ऐसा अर्थ हमें भालुम होताहै.

१७ प्रश्न—हिंगंभरोंके विषये ईसें लिखाहै “कि तोतापाथी वा शुभानपाथी भविरमें प्रतिभाके डिक्काशु पुस्तक पुजनेवाले हैं” ईसका क्या तातर्फहै? पुनरपि लिखाहैकि हिंगंभरोंके “चार संध लुम्बे” परंतु ईनके नाम हीक भावुम नहीं होतेहैं वे नाम डानसे हैं? पुनरपि लिखाहै कि “उनके वीस पांथी लुम्बे” परंतु डेवन चार पञ्चियोंके नाम लिखाहैं सो सेपड़े नाम डैनसे हैं? और तेरापाथियों के विषयमें लिखाहैकि “उन्होंने अहुताही डोणा रथना अदी कीहै.” ईस कहेनेका क्या अर्थ है?

**उत्तर—**योडेसे वर्ष पहिलें हिंगंभर भतमेंसे ओक नवीन शाखा नीकलाहै वे भविरमें प्रतिभाकी जगा पुस्तक रखतेहैं और पुस्तककीही पूजा करतेहैं. प्रतिभाकी नहीं जिनका बोक्ताता पांथी वा शुभान पांथी कहतेहैं.

हिंगंभर भतके च्यार संध लुम्बेहैं तिनके नाम—भुजसंध १. काटा-संध २. भायुरसंध ३. गोप्यसंध ४. ईन च्यारों संधोंके नाम राजशेखर सूरि कृत पर्यं दर्शन समुच्चय थंयमें हैं.

ईन च्यारों संधोंके पिछे भूमि संधमेंसे हिंगंभरी श्रावक लोडाने ओक नवीन पांथ नीकला है. ईस भतका नाम तेरापाथी कहते हैं और पूर्वोक्त च्यारोंकी संध ‘भाननेवादेहो’ वीश पांथी कहतेहैं तथा पूर्वोक्त तोतापाथी वा शुभान पांथी यह तेरा पांथीमें गीने जाते हैं.

अहस्थी तेरा पांथीओं हिंगंभर भतमेंसे नवीन पांथ काठ कर लगातरी वातो मन कल्पित और शास्त्रोंसे विश्व करने लग गये हैं.

१४६

## શ્રી જૈનભાગ્ય પ્રકાશ.

૧૮ પ્રશ્ન—વલ્લભીકે ભંગકે વિષયમે ઐસા લિખા હૈ કે શ્રી ગંધર્વવાદી વૈતાળ શાંતિસૂરિને સંઘડી રક્ષા કિર્દી” ઈસકોં મેં આચથી તરેક નહીં. સમજતા હું.

ઉત્તર—૧૯૪ વલ્લભીનગરીકા ભંગ હુચાચા તથ લિસ. નગરીમે “ગંધર્વવાદી વૈતાળ શાંતિસૂરિ” ઈસ નામકા આચાર્ય યે. ઉસ આચાર્યજીને આપને જાનકે અને એનાં દેખકર નગરીકે ભંગ હોનેસે પહોંચેલી આપને ડ્રેન-સટેકોં કંડ દીયા કે “ઈસ નગરીમે જિતતી કૈન પ્રતિમા હૈ ચો સર્વભી ઔર કિસી નગરમેં બેન હો ઔર તુંગલી ઈસ નગરમેંસે ચો જાઓ” ઐસા કહુંકર આપણી બધાંસે અથે ગયે યે. ઈસ આચાર્યજીની નામ આસુલ તો “શાંતિસૂરિ” થા પરંતુ કિસી ફરણુંક લિખે “ગંધર્વવાદી વૈતાળ” ઐસા બિરદ (હોદા) હેઠમે આયા થા.

૧૯ પ્રશ્ન—બિદ્ય ઔર સુગ પ્રધાન દિસકો કહેતે હૈ?

ઉત્તર—૫૪મ કાળકે ૨૩ દિસ્કે કહે હૈ. ઉસ દિસ્કે કે આદમોનિસ સમયમેં કૈન ધર્મકી અધિક વૃદ્ધિ હોતી હૈ તિથ સમયકોં જીવા કહેતે હૈ આદ ઉસ કાળમેં નો સર્વસેં અધિક જાનવાંત તથા શુદ્ધવાંત આચાર્ય હોવે તથા ઓરબી શાસ્ત્રમેં કથન કરે હુંએ ગુણોંકા ધરનેવાલા હોવે ઉસકોં સુગ પ્રધાન કહેતે હૈ.

૨૦ પ્રશ્ન—જૈનભત ધૂક્ષમેં ઐસા લિખાહેંક “વિકામાત્ર રયશયતે ઝડપભ પ્રેસાદમેં શ્રી ચંપ્રતિથા હૃત ચંદ્રાવતીશી મંત્રી દિક્ષા દેનેવાલા શ્રી સર્વ દેવસૂરિ. વિકામાત્ર ૧૦૦૮ પૌષ્યશાલા રિથતિ” ઈસકે અન્વય આદ અર્થ મેં નહીં સગજતાહું. પ્રાબ્લ: અશ્રીમ વિકામાત્ર શાખદકી પાસ એંક ભૂત લ ગયે લગતેહે.

ઉત્તર—વિકામાત્ર ૧૦૧૦ એક હન્દર ‘દશમેં રાગ શયન્યપૂરે’ અધીત રાગશયન્ય નાગરીમેં શ્રી ઝડપભદેવ કે મંદિરમેં આઠમે શ્રી ચંપ્રતુદ્ધી પ્રતિમાદી પ્રતિથા કરનેવાલે આદ ચંદ્રાવતી નગરીક રાજેકા મંત્રી કોણ નાગા જીસકોં નિકા દેનેવાલે તથા વિકામાત્ર ૧૦૦૮ મેં નો ૮૦ હાર બિતરના છોડકર ગ્રામમેં બિતરે સોઢી ‘સર્વ દેવસૂરિ’ હૈ.

૨૧ પ્રશ્ન—વાદી વૈતાળકે વિષયમે યહ લિખા હૈ “ધિરાપદ ગરુદે સર્વે” સો વાદી વૈતાળ કૈનમેં હૈ આદ ધિરાપદ ગરુદ કિસકોં કહેતે હૈ? ઈસગચ્છક આદભ કંડાંમેં આદ કિસરો હુચાંચીએ ઈસ ગરુદદી શુદ્ધ પરંપરા કોનસી હૈ?

## प्रश्नोत्तर.

१४६

उत्तर—“वाही वैताण शांतिसूरि” ऐसा नामके आचार्य हुए हैं परंतु गाधवनाथी वैताण शांतिसूरिसे यह अलग है. ईनोका चरित श्री प्रभाविक पुरुष चरित नामा अंथमें है जैसे येरापद्धिय गच्छ नाम पड़नेका कारण हमें यह भावूम होताहै कि भारतात् देशमें येराद नामा गाम है, उस नाममें ईन आचार्यके पूर्व पुरुषोंका जना बहुत हुआथा ई. सवास्ते ईन आचार्यके गच्छका नामली येरापद्धियगच्छ प्रसिद्ध हुआ है. जैसे ईसगच्छकी शृङ्खाला डिस संवत्सरे हुई है जैसे ईन आचार्यमें हूँठ है सो हमें भावूम नहीं है परंतु ईतना तो वांचनेमें आया है कि यह येरापद्धियगच्छ चंद्रकुण्डमेंसे नीकला है.

२२ प्रश्न—श्री जिनवक्षभ सूरि के विषयमें ऐसे लिखा है कि विडविशुद्धि १ भवारिवारण २ वीरचत्रित्रि ३ पडांशी प्रकरण ४ संघ पंडिक ५ प्रमुखग्रन्थकर्ता ” ये नाममें नहीं समझता हूँ.

उत्तर—जिनवक्षभ सूरिने “पिंडविशुद्धिनामकग्रन्थ, भवारिवारणस्तोत्र, वीरजिनचरित, पडशीनामक ग्रन्थ और संघपट्टकनामा ग्रन्थरचेहै जिनमें पिंडविशुद्धि नामक ग्रन्थ, वीरजिन चरित जैसे ३ पडशीनामक ग्रन्थ ये तीनों ग्रन्थ प्राकृत भाषामें रचेहैं जैसे भवारिवारण स्तोत्र समसंस्कृत प्राकृत में तथा संघपट्टकनामा ग्रन्थ केवल संस्कृतमें रचा है.

२३ प्रश्न—चंद्र प्रभके विषये ऐसे लिखा है कि पुनिभिया भत नीकाला आर्यात् पद्धी पुर्णी भासीके दीन करणी जैसारुग प्रधानादिके प्रभाणु करेकी जैसकी संवत्सरी छोड़ दीर्घ जैसे पंचमीकी संवत्सरी भानने लगे ईसका आर्य ठीक नहीं समझता है, किंतु युक्तासा करके आर्य लिखिये.

उत्तर—जैनभत वृक्षकी ग्रन्थ शाखामें जो मुनिचंद्रसूरि लिखे हैं तिनके बड़े युह आतायं प्रभासूरि हुओ.

युग प्रधानोंके विचे हूँसरे उत्थके ७ वें सुग्रधान श्री कालकायर्थ-ज्ञने दिसी कारणके वास्ते पंचमीकी संवत्सरीके स्थानमें जैसकी संवत्सरी कहा.<sup>१</sup> उस वर्षमें जितने जैनभतके आचार्य विद्यगान ये जन सर्वोन्मुखी यह कालकायर्थकी रीति भान्य करी. सो आज एक रीति रीति चली आर्ह है. जैसे आज कर्णवी रीति रीति संस्कृत है, परंतु विचमें

१. जैसकी संवत्सरी करने वें वहूत काम्हो। है.

१५०

## श्री जैनधर्म प्रकाशन

कितनेक वर्ष पहिले कार लिये हों ये चांद्रप्रभसूरिने द्विर वेणुही चौथकी संवत्सरी छोड़कर पांचमीकी संवत्सरी करी तथा जे जैनभृतमें सनातनरीति चतुर्हरी के रोज पाकिक प्रतिक्षमणु करनेकी है जो छोड़कर पैर्खुगारी और 'आमावास्या' के रोज करने लगे तथा औरली कितनेक वाते शास्त्रोंसे विश्व करते लगे। उस दिनसे पूर्णिमा भत कहाने लगे।

२४ प्रश्न—लुप्तकडे लिप्यमें लिखा है कि 'लुप्तक लिखारीनेकिन अतिभा और आगग पांचांगीका उथापक भत नीकावा प्राय वेषभूषेने धारणु करा।' ईसका अर्थ में नहीं समझता हूँ। सो जरा विस्तार करें लिये।

उत्तर—आडमदावाह शहरमें संवत् १५०८ में एक लुप्तकनामा आवक बनीया था, लिखारीका (पुस्तक लिप्येका) काग करता था। उसने जैनभृतमें जे पेंतालीश मुख्य शास्त्र कहते हैं उनमेंसे ३१ ईकतीससंबंधे गानकर आंगीकार करे और शेष छोड़ दीये तथा पांचांगी अर्थात् भूग, निर्धुक्ति, भाष्य, सूर्यु, और दीका। ये पांचांगी आंग भानते छोड़ दीये और एकही भूग भानते लग गया ईस वास्ते उसकों पांचांगी उथापक कहते हैं। उस लुप्तकनामा बनीयेक उपदेशसे एक भूषा नामे बनीयेने अिनाही युर जैनभृतके साधुका वेष धारणु करा। और उससे पांच शक्ता उनकों लुप्तकभत कहते हैं।

२५ प्रश्न—कथाकेष नामक अथ शास्त्रमें जिना जाता है वा नहीं? जैन भतवावे उस अंथका शास्त्र जनके आहर करता है अथवा कहानीकी पोथी करके भानते हीं जे कथाकेष अंथ ईस समय विद्यगान है सो असल अंथ है वा क्वाइ अंथका संक्षेप है? क्वाइ कहते हैं के आगे वडा कथाकेष अंथ था उनका यह संक्षेप है सो सच्च है या नहीं?

उत्तर—कथाकेष ईस नामक अथ पहुँचत है। उनमें दूर्क्त कहाणीयां ही कथन करी हैं। उसमेंसे जे पूराये जैन शास्त्रोंके अनुसार है वे सत हैं।

यह जैनभृत वृक्ष लिखा गया था उस समयमें भेरी आंधमें भेटीयाका दृढ़ था सो कटवाया था जिस करके में उस जैनभृत वृक्षका लंभाणु टेख नहीं काढ़ा उनसे जैसा देखकर लिख दिया दैसाही आप के

## અચ્ચંકારીભટ્ટા.

૧૫૨

પાસ બેન્દ ગયા થાં અણ હમ યક્કિન રહતે હૈ કે છસ જીતરોમાં વિષે મુ-  
જિય આપ શુદ્ધ કર્તાલોગે.

િત્વલસ

## અચ્ચંકારિભટ્ટા.

પૂર્વે થઈ ગયેલા મુનિપતિ નામે સાધુનું ચરિત્ર સુપ્રસિદ્ધ છે, પદું  
જીવનિકાય રક્ષણને વિષે તત્પર અને ગીતારથ એવા તે મુનિ એકલવિહાર  
પ્રતિગીએ આંગીકાર કરી અન્યથા શીતકુળે જીજનવિની 'નગરીના' જીવાનને  
વિષે કાયોત્તસરે રહ્યા, તે નોઈ સખીએ જીવાના ગદક પરિણામી જોપાણોએ  
શીતથી રક્ષણ થના માટે પ્રવર વસે આચ્છાદિત ઈયા. એવાગાં પાસેના  
નાના ગામભાં રહેનાર ઢોધ આજણું સ્વરૂપ થયેલ તેને લાં લાવી આગ્નિ-  
દાદ કર્યો. રાતે તે ચિત્તાભોથી ડુડેલા અંગારાનકે મુનિના શરીરે આચ્છા-  
દિત કરેલું વલ્લ સળગ્યું. તેને લીધે મુનિના શરીરની ચામડી દ્વારા થઈ પ-  
રંતુ ઉપસર્ગ સડન કરવાને વિષે ધાર જેવા તે મુનિ પોતાના ધ્યાનથી ચ-  
વિત થયા નહિ. પ્રમાત્રે જોનાશીયાઓ સાધુને ઉપસર્ગ થયેલો નાણી કરેલા  
આણી શહેરમાં કુંચક નામે એહિ ધર્મનો રાગી વસે છે તેને સર્વ વૃત્તાંત  
નિરેદન કર્યો. તરતનજ કુંચક આવક ભડિત્પૂર્વક તે સાધુને પોતાને ધરે  
લાગ્યો. ગામભાં રહેલા પીળ મુનિઓને સગાચાર કહેવરાવ્યા. સર્વ સાધુ  
એકવ થઈ કુંચક શેડને કહેલા લાગ્યા કે તમે કહો તે પ્રમાણે અમે કરીએ.

કુંચક શેડ કહું 'આ ગામને વિષે અચ્ચંકારીભટ્ટા નામે શાવિકા વ.  
સે છે તેને ધરે જઈને જીતગ જાતકું લક્ષપાક તેલ છે તે વહેરા લાવો.'  
તરતનજ થુગાં સાધુ અચ્ચંકારીભટ્ટાને ધરે ગયા. લાં જઈ મુનિને થયેલા  
ઉપસર્ગ સંભાંધી વૃત્તાંત જણાની લક્ષપાક તેલની યાચના કરી. તે સમયે સૈધર્મ  
દેવકોઝની સુધર્માસમાને વિષે એડેલા સૌધર્માંદે પ્રશાંસા કરીકે 'અચ્ચંકારિભટ્ટા  
સમાન દ્વારાવાંત ઢોધ નથી તેને ઢોધ ઉપાજવનાને દેવતા પણ સર્વથી નથી.'  
'તે વારે' ઈદ્રના એ વચન ઉપર અન્યથા ધારણ કરનારો કોઈ દેવ તેને ચ-  
લાવવાને ઉપસર્ગ કરવા આવ્યો.

મુનિએ યાચના કરી કે તરતનજ અચ્ચંકારિભટ્ટાએ દાસીને તેલ આ-  
પવાનો હુકમ કર્યો. એમ મુનિને દેવાને લાવતારી દાસીના હાથમાથી તે

१५२

## શ્રી કૈતિંધર્મ પ્રકાશ.

દેવતાએ વણુ કુંપા પાડીને તેલ ઢોળાયું. તે વારે કેશ પણ કોધને ધારણું ન કરનારી ભટ્ઠા પોતે બડી અને ચોયો કુપો લાવી સુનિને તેલ આપતી હલી. તે સમ્યક્તવંત છે તે ગુણુને લિધે તેના હાથમાંથી દેવતાએ તે કુપો પડાવ્યો નહિ.

સુનિને લક્ષ્યપાક તેલ ઝાઈ ભટ્ઠા પ્રત્યે કહ્યું ‘ભાગ્યશાલી આગારે કાને તેલ લાવતાં દારીના હાથથી વણુ કુંપા ભાગ્યા ને તમારે તુકથાનયથું પરંતુ તમારે કોધ ન કરવો. એ દાસીને ઝાઈ ઉપાકાંબ ન દેવો’ તે વારે અચ્યાંકારિભટ્ઠાએ કહ્યું ‘હે સુનિ કોધના ઇળ મેં આજ ભવો નિપેસાંપૂર્ણ રિતે અતુભવ્યા છે તેથી કોધની ઉપર પણ મને કોધ થાય તેવું નથી.’

સુનિને કહ્યું ‘આજ ભવો નિપે તમે કેવી રીતે કોધના ઇળ બોગ્યા?’

ભટ્ઠાએ કહ્યું ‘મારે વૃત્તાત સાંભળો.—

આ નગરને વિષે અદ્યાત્મને વિષે સુખ્ય પદીને ધાગળ કરનાર વન્ન-અદ્યાત્મના વિષિક છે. તેની સર્વ શુણુ સંપદ કરગણ્યથી નામે જીં છે. તે ને અતુક્ષે આડ પુત્ર પણ, તે પ્રાર્થ એક જીવનનો દાતાન ગયેનું ભટ્ઠાએ. હું નામ પણ કુંપા. વરમાં એકાંક લાગા હોવાચા સર્વ બાંધુ જનોને તે અત્યાત પ્રીય હતી. સગા સંબંધી અને કુંપાથી કનો પણ તેની ઉપર પૂર્ણ પ્રીતિ દેખાવા લાગ્યા. માતાપિતાને પણ વિશેષ વખત હોવાથી તેઓ સર્વ સમક્ષ કહેવા લાગ્યા ને અમારી આ પુત્રીને કાર્યાલ્ય તુંકરા ન કરવો. અને તે કારણ માટે તેને ‘અચ્યાંકારિભટ્ઠા’ એ નામથી સૌંદ્રે બોલાવવી. ત્યારી નગરને વિષે પણ તેજ નામ પ્રસિદ્ધ થયું.

“માતા પિતાના અધિત પ્રેમે પુત્રીનાં પ્રાપ્ત થતા સુગણ્યુને અદ્યાત્મયા. જેમ ધણુ તવંગર કુંપોમાં હાલ સમયે અને છે તેમ પુત્રી મોઢ ચદવેલી થઈ. તેના છતા હોથ કહેવાને પણ કોધ સર્વથી નહોંનું. સૌ કોઈ અદ્યાત્મ માણુસોની શુશાલી કરવા તત્પર હોય છે. તેઓના અરા હોય મોઢ કહી કોણ અળખામણું થાય એમ ધારી સૌ હાજરા કરે. આથી પુત્રી વધારે ઉચ્છૃંખલ થઈ.”

અતુક્ષે હું યૈવતાવસ્થને પ્રાપ્ત થઈ. સારે ધણુ મહુષો ગારી સાથે લમ્બ કરવાની ધચ્છાથી મારા પિતા પાસે યાચના કરવા લાગ્યા. • જે કોઈ માણુસ મારી પુત્રીનું વચ્ચેન ઘંડન નહિ કરે અને સર્વદા તેતે આવીન રહેવાનું કશુલ કરવો તેને મારી પુત્રી પરણ્યાની ધીમાને હું એ ભાગકુ

## અચ્છયંકારીભક્તા.

૧૫૩

નહીં આપું. એમ સર્વિને મારા પિતા ઉત્તર આપવા લાગ્યા. એક દિનસ નગરના સુષુદ્ધિનામે ગંત્રીએ જને નોઈ. વ્યામોહ પ.મી મારા પિતા પાસે તેણે યાચના કરી તે વખતે પિતાજીએ ઉપર પ્રમાણે તેને પણ કહ્યું. તેણે તે વાત આંગીકાર કરી. એટસે મારા પિતાજી તે સુષુદ્ધિપ્રધાન સાથે માણં પાણી થણણું કરાયું.

પછી મારા ભર્તારની સાથે હું સુખ બોગવતી રહેવા લાગી. મારો ભર્તાર પણ મારા વચનતું ઉલ્લબ્ધન કરતો નહોતો. હું ને પ્રમાણે આત્મા કર્તા તે પ્રમાણે તે વર્તતો. એમ માતાપિતા ભર્તાર, અને કંદુણી જનો થી પુનાતી હું ગતુષ્ણને વિષે દેવ સંખ્યા સુખનો અનુભવ કરતી. મારો ભર્તાર નિરંતર સંદ્યા સમયે વૃપતિની આત્મા માંગી ધરે આવે. ગમે તેવું કાર્ય હોય તો તે પદતું મુકી મારી આત્મા જરૂર ન ગાપ તેચા માટે સંદ્યા સમગે નાન્યા વગર નથે નહિ. એક દિન રાજાએ તેને પુછ્યું ‘ગંત્રીઓ! બાળમાં તમે શિધ્યપણે સર્વ કરી મંત્રાનું પરે કેમ નાણી રીતે?’ કેમણે કહ્યું જરૂરીની. મારી જીવીની આત્માથી વેહેવો નહિંદ્યું. પ્રધાનને એવો ઉત્તર સાંભળી રાખને તે દિવસે ધથ્યા વખત સુધી જ્ઞાનેસારી રાખ્યા. અને અર્થ રાની સમય થયો તારે રન આપી. હું ધરના દાર દર્ઢને જલગૃતાદસ્યામાં શય્યા ઉપર એજી હતી તેવામાં મારા ભર્તારે આત્મા કહ્યું ‘ચંદ્રવહે દ્વાર ઉધાડો’ ને ઉત્તર તરુણાપોં પુનઃ તેણે કહ્યું કૃશોદરિ। અત્યંત ઉત્કંઠ પૂર્વેક હું તમારું વચન અંગુન કરતો નથી. શા માટે તમે વાસ વસું દાર વાસીને એકાઢો. હું તમારો હિંકર થાલાર ઉમો હું માટે દાર ઉધાડો.’ એમ ધથ્યા પ્રાર્થના વચન મારી પરયે કહ્યા. પરંતુ અગાનવંત એવા મેં કોણવા વથથી તે ઉપર કાઈ ધ્યાન આપ્યું નહીં. હું ભર્તાર પ્રત્યેનો મારો ધર્મ તદ્દન લુલી ગઈ. અગાનરપી આંધકારમાં હું છવાઈ ગઈ. કોણે સર્વ મને ધેર લીધી. અને સામો પ્રત્યુત્તર; ન આપતાં હું તદ્દન મુંગી બેસી રહી અને દાર ઉધાડ્યું નહીં.

તે સમગે મારો ભર્તાર સ્વયમેવ એકવા લાગ્યો ‘આહો મુખ્ય અન્યાન તો હુંજ છું’ ને આ જીવીને આત્મી કોઈ જાણુંાં છતાં પણ મોહનાના વશથી મેં પાણિથણું કર્યું. ખરેખર મોહન માણસને ભુલાવામાં નાંભી ગમે તેવા આકાર્ય કરાવે છે.’ તેના આત્મા વચન સાંભળી તત્કાળ દાર ઉધાડી કોણ યુક્ત અડાર નીકળી ચાલવા માંગી પરંતુ ગારા પરિણે અને

१५४

## श्री क्लेन्टनमि अकाश.

जेवानी नहों ऐम डोधभरी हुँ भारा पिताना धर तरह जडीछुं तेयां  
आं स्ते गते चेदे खटी, तेहे सद्य आभरणु लई भते नगर बडार  
पेताना अविष्टिने स्थी तरीके राखवा सांपा.

सं पविष्टिये भते स्थी तरीके थड्यु कर्याने देवा विचार अया-  
यो यरंतु तेनी ते वात में अगीकार हुँ उद्दी लर तेज नने पद्म  
गारी अने अलाकार करवा तैयार यें, तापशु छ गरापशु हा नहों  
नें वेसगान तिकाना अजित धरते नियर न इयो लार तेज गते आ-  
धी मुझ, ऐम सांधी रिने क्षर्या पमाई अलाकार करते नेह तेनी  
गातां तेने क्लबुं वतसा सती साथे अलाकार न करवे। सतीआ निर्भग  
शीयगना अगावथी दृष्टि गत्युष्णिता दृष्टि भावथी नाश करे छ. ए काई  
सती क्लबुयां छे आए ते तारी उपर क्लेषसंयुक्त थाय अवुं आयरण  
तारे न क्लबुं तें सांधे तुं अङ्गतानो दृष्टांत सांभग.

अङ्गतानीभां काई परिवान्नक रहेतो होता तेने अगावा कहना प्र-  
योगथी तेनु क्लेस्या सिद्ध अर्ह, हवे ने वृक्षनी नीचे जेसी ए तपश्चयं क-  
रोछ तेव्वु उपर अगावीतो भागो छे गोड द्विस तेनी उपर अगावीये  
निधा करी, तेथी ते तापसे तेनी उपर असंत क्लेषयगान थर्ह तेनु वे-  
स्या मुझ नेथी अगावी तथा अगावो अणाने भरम थर्ह गया, वणी भनमां  
चितवना लागो उ ने क्लाई भारी अवता करते तेने ए अभावे आणी  
मुझीय, अथी ते तापस निधाये नगरमां गयो, लां अङ्गता अविकासे घरे नी-  
क्षा करवा गयो, ते स्थी पेताना नर्तार मेटे देवनावि सानयो तैयार क-  
रती हती तेथी निक्षा अपता तार दारी धर्यारे ज्यारे लिदा आपवा  
आगी ल्यारे तार्यक क्लेषयगान थर्ह ते अविका उपर तेनु वेस्या मुडी प-  
रंतु ते स्थीने कांधपणु उपश्च न थेयो; कारणु उ ते स्थी शिया युशे क-  
री संयुक्त हती तेथी तेना ते जितम युवथी तेनी रक्षा थर्ह, पठी स्थी  
ए ते तापस प्रत्ये क्लबुं हे निहंडी हुँ काई अगावीभां रहेनारी अगावीन  
हिं नेथी, तार धार्यु थाय, तापसे पुछ्यु ए वृतांत तमे केम नाण्यो,  
स्थीये क्लबुं ए सांधी वाण्यारसी नगरीतो रहेनार कुंभार तते समग-  
वशे, तापस एम सांधी आश्र्वय पाभी तरतज वाण्यारसी नगरी  
तरह गयो, लां ज्यारे ते दुंभारने मणी सर्व वृतांत निवेदन क्यों, ते सां-  
भणी डुंभारे क्लबुं हे तापस! निर्भग शीवयुगे करीने ए नाईने आव-

## અચ્યુતકારીભક્તા.

૧૫૫

વિજાન ઉત્પન્ન થયું છે. તે જાને કરીને સર્વીદૃતાંત લાણું છોંગને પણ  
તેજ શુણે કરીને જાન ઉત્પન્ન થયું છે અને તેથીજ મેં સર્વીદૃતાંત જાણ્યો.

એ દ્રાંત સંભળતી ભાતાણે પુત્રને કહ્યું ‘વત્સ ! જગતને નિપે શિ-  
ખણ થુણું એ પ્રધાન થુણું છે: આએ શિખણવાંત મનુષ્યને કૃત્ય ઉપયોગ્યો ન-  
થી. ભાતાણ એ વચ્ચે બાદ રહ્યા હોય. અને મને લાંઠી કાઢી સુદ્ધા-  
ના દિવસાર કરી રહ્યો જાના એક સાર્થકાદને વેચાતી આપી. સાર્થકાદે  
ખથું માર સુદ્ર ઇન્દ્ર નીચ લું તરીકે રાખ્યા વેચાતી લીધેલી તેતો તે  
ધારણા સુજર્ય તેણે ગને બંડું પ્રકારે વીનની પરંતુ કાઈ પણ પ્રકારે મેં  
શિખણ અર્દન કરવાતું. ચાર્ચિકાર કર્યું નથી. તેથી તે સાર્થકાદે મને બધ્યાર  
દેશાં રંગાને લાંઠેશી.

મને ખ્રીદ કરતાર હમેશાં, માડું પોથણું કરી શરીરમાંથી રહિયા, કા-  
દી રંગવાના કામગાં લેવા લાગ્યો. એમ નિર્દેશટર રહિયાથી જાતે, આ-  
લંત પીડા ઉત્પન્ન થવા લાગી. આને માર શરીર પ્રીતનાંથી રથી ગયું. એ-  
ગ ધણે વખત, ઇંધ, સહન, કર્ષું તેવામાં હૈવ્યોગે, મારો, એક ઝાંચી તે  
સ્થાનકે આંધો. તેણે મને કોઈ, પ્રથમતો, ઓળખી નથી. શંકાસ્યાણું આ-  
સપાસના, મનુષ્યોને પૂર્ણ પરંતુ સત્રોષકરક બ્રતર ભાવ્યો. નથી. લારે, મન-  
ને આવીતે પુર્ણું, તમે કોણ છો? લારે, ‘ઉજારાયિતી, નગરીના. એક ધ-  
નરની સાહુકારની હું. દીકરી હું. વિગેર હકીકત જણાતી. એટાં તેણે મને  
ઓળખી ભારા ભાવેકને દ્વય આપી ગને છોડાવી આવે લાંધ્યો. અથી, નિ-  
વિધ પ્રકારના આપણે કરીતે માર શરીર સત્રયાં થયું હવે હું રોપસુક્તા  
થઈ આવે. ભારા ભર્તારની સાથે સુખ સંગ્રહીમાં રહું હું.

એમ ભાદાએ પોતાનો વૃત્તાંત જણાવી સુનિ અત્યે કહ્યું ‘હે સુનિ !  
એમ આ ભવમાંજ મેં કોધના ઇન્દ્ર, સંપર્ણ રાતે અતુભાવ્યાં છે, તેથી હવે  
મને કાઈપણ પ્રકારે કેવ વિડાનાં કરી, શકે તેવું નથી’. પ્રસંગે દેવતાણે  
પણ આ વૃત્તાંત સંભળ્યો. સંભળી ઈદ, વચન, ઉપરાધ્યા થધ. તલ્કાળ પ્ર-  
ગઠ થઈ અચ્યુતકારિભટા પ્રત્યે કહ્યું ‘મહાતુભાવ ઈદ્રે કરેલી. તમારી પ્ર-  
શાંસાને નથી’ સહન કરતાં તગાડી પરિક્ષા કરવાને હું આંધો, હતો. નિ-  
શ્યે તમારા શરીરમાં કોધનો. આંશ માને નથી, ને ઈદ્રે કરેલી પ્રશાંસા સ-  
લ છે’ એમ કહિ ખાંચિત કરેલા કુંપા સાના કરી હેવ સ્વરસ્થાનકે ગયો.  
આને સુનિ તેવ વહોરી કુંયક રોધો ધરે ગયા.

१५६

## श्री जैनधर्म प्रकाश.

ज्ञाधर्थी डेवा भादा इण गले छे, आने शियलथी डेवा सारा इण गा-  
वे छे ते आपततो आ चरित्र संपूर्ण आदर्श छे. धर्षा आसान स्विपुर्णप्रे-  
सहजनी आपतमां ज्ञाध करी धर्षा भनुभ्येने माहुङ लगाउ छे तेजोंचो  
आ चरित्री संगमण्यु लर्ह ज्ञाधतो लाग करने आने शियलवंत थवा उ-  
त्सुक थवुः

## आज्ञाए धर्म.

श्री जैन सिद्धांतेने विषे मुख्यत्वे करीते ‘आज्ञाए धर्म’ कहेत्रो  
छे. दृष्ट धर्मकियांचोने भाटे ने ने प्रकारे सिद्धांताभां वर्णन आपेक्षु छे ते  
प्रंगाणु वर्तवुं तेतुं नाम आसा छे. स्वभति कृप्तना मुक्त्य अथवा गो-  
कांत डार्ची अमुक्त वात्य उपर आधार राणीने वर्तवुं ते आत्माथी विमु-  
ख्यपाणु छे. जैन गाँडीमां भुम्यपछु अलिंसा भूण धर्म क्षेवाय छे प-  
रंतु ते संबंधमां आवक्त आने सावु मुनीराजने ने ने कार्य करवानी आ-  
गा आपेक्षी छे ते मुक्त्य वर्तवुं तेतुं नाम पशु धर्मज छे आने ते आ-  
गांचे धर्म क्षेवाय छे. नेम के सावु मुनीराजने त्रिविधे त्रिविधे हिंसा क-  
रवानो लाग छे तोपशु नेमां भाव दृष्टिशे हिंसा हेखाय छे गेवा हेश  
प्रदेश विहार, नदीओतुं बितरवुं, आवक्त तीर्थ यात्रा, स्वाभिवच्छाळादि  
धर्म कार्य करवानो उपदेश हेवा. ईत्यादि जिनालयुक्त कार्य करवा ते जैन-  
धर्मतुं आराधन छे कमडे ते ते क्षेमीमां भान्त स्वरूपे हिंसा छे परंतु  
आतुर्धे द्या छे. शास्त्रगां द्या आने हिंसाना स्वरूप, हेतु अने आतुर्ध-  
ध गेवा त्रशु त्रशु लेद यताव्या छे ते अन्य स्थानकेथी जणु लेवा. हाल  
प्रस्तुत विषय आपणा आगान्प्राभाष्य कुरवी गेवा छे ते संबंधमां मु-  
ख्यत्वे नेचो. जैनधर्मते भान्तनारा क्षेवाठी अकांत ‘द्या भूण धर्म’ क्षी  
क्षीने जोणा भद्रीक ज्ञवोने हो छे ने के तेजो पशु उपर जणाव्या  
शिवाय थील पशु उटवीक धर्मकियांचो करे छे नेमां के प्रतक्षपछु हिंसा  
हेखाय छे छतां पशु लोडेने ‘द्या, द्या’ करीते हो छे आ प्रभाशे कर-  
नारा डाणु छे? गेवा प्रश्न जित्यन थवो तेना बितरमां गेज क्षेवानुं छे  
के तेवतो गोक जिनालयाथी विमुख गेवा छुङ्डको छे नेना संबंधगां  
धर्षु धर्षु लभ्याई गमेल हेवाथी आने लभवानी जरूर नथी. आने भान्त

## આશાએ ધર્મો.

૧૫૭

આત્માતુંન પ્રાધાત્યપણું દેખાડતાતું છે. જૈન શાસ્ત્રમાં કહું છે કે—

જદૃતુસંબંધણ મય યંદળાઇ સુન્ધાઇ સુન્ધરાંધિ ।

વિહલાઇ તહજાણસુ આણારહિઅ અણુઢારાં ॥

ભાવાર્થ—નેમ હેતરાતું ખાડવું, મૃતકને શષ્યગારવું અને શત્યચ-  
રણગાં ઇન કરવું નિષ્ઠળ છે તેમ આશા રહીત ધર્માતુષ્ટાન પણ નિ-  
ષ્ઠળ છે.

આણાઇ તબો આણાઇ સંજમો તહ્યદાણમાણાએ ।

આણારહિઓ ધર્મો પલાલ પુલુચ્ચ પદિહાઇ ॥

ભાવાર્થ—આશાએ યુક્તાજ તપ્ય, ‘આશા એન્ઝ’ સંજમ તેમજ આશા  
એન દાન દેવું દુક્તા છે. આશા રહિત ધર્મ પરાળના પુણાતી નેમ નિ-  
માલ્ય દેખાય છે.

વિચારો રે હુંદુક ધર્માંઓ । તમે દ્વા દ્વા પુકારો છો અને દિસાતા  
કાર્ય કરો છો પણ બાગવત તો દરેક ધર્મ આત્માનાજ કહે છે. તમે જિન્ન  
પૂલાદિક ધર્મકિયામાં દિસાતી પરથણુ કરીતે ભવ્ય જ્યોતે ઇસાતો છો  
પરંતુ જૈન ગાર્ડિમાં ‘આશા એન્ઝ’ ધર્મ છે અને જિન્ન પૂલાદિક સર્વે ધર્મ  
કિયાએ. આશા યુક્ત હોવાથી અતુભૂતે દ્યાવળોજ છે ને એકાંત અહિસા  
એન ધર્મ કહેશો તો તમે નીવિધે નીવિધે પ્રાણુતિપાતનો લાગ કરીતે  
ઓગાતુ થામ નિહાર કરો છો, નદીઓ જતરો છો, આહાર પાણી બહોર-  
વા જાઓ છો, ધર્માનાદેશ દોછો વિગર અનેક કાર્યોમાં શું જીવ વિરાધના  
નથી થતી? અને ને થાય છે તો તેને માટે શું તમે રાખ ગઢાશત જા-  
ચયો. લારે છુટ રાખી છે? નથી રાખા. પરંતુ જૈન માર્ગ સ્થાદાદ છે તે-  
નાં તો ને પ્રકાર જિનેશ્વર બાગવતે આશા કરી છે તે પ્રમાણેજ વર્ત-  
વાતું છે. તમે મુખ્યાનાંદીઓ, જિનાદારી વિરુદ્ધ વત્ત. છો! તેમજ જિના-  
ના વિરુદ્ધ જીપદેશ હો છો પરંતુ જિનાદાના ભાગ કરતારતે માટે શાસ્ત્રકાર  
શું કહે છે તે જુઓ—

રસ્તો આણા ભંગે ઇકુચિયહોઇ નિગમહો લોએ ।

સચ્ચવનુ આણા ભંગે અણંતસ્સો નિગમહો લહાઇ ॥

ભાવાર્થ—આ કોઈને વિષે રાજની આશાનો ભંગ કરવાથી ગાત્ર

१५८

## श्री कैनदर्भ प्रकाश।

ओङ वर्षत नियह थाय छे परंतु सर्वतुनी आतानो भांग करताथी अनंतीवार प्रस्तु नियह पामे छे।

वणी एवा आताना भांग करनाराचो साधु दिंवा शान्त गमे ते हेय पथ तेने संधमां गणनानी शास्त्रकार ना कहे छे—

**सुहसीलाओ सच्छंदचारिणो वेरिणो सिवपहस्स ।**

**आणामद्वाओ वहुजणाओ माभणहसंघुति ॥**

भावार्थ—सुभशेणाचा, स्वच्छंदयाती अने शीतपथना वैरी तेमन आताचे करीने भृष्ट एवा बहु जख्ने पथ 'संध' एग न कहेवुं।

न्यारे उपर प्रभाषे आतातुंज प्राधान्यपछुं छे लारे दरेक कार्य आणा सुक्तज इरुं येण्य छे. हवे नेचेचा शास्त्रेकत रीते जिनेश्वरना यारे निक्षेपा भानीक गणे छे तेगना संगधमां पथ डेऱ्हुक कहेवा नेवुं छे— श्री आद्व विधि विग्रे जैन थयेगां देव द्रव्यनी वृद्धि करवाने भाटे क्खुं छे के “नेटला इपीआ आपवाना हेय ते करतां विशेष किंभतुं सुवर्णु अद्वयु करीने देव द्रव्यतुं व्याज उत्पन करुं, परंतु आंग उत्पार आपाने अथवा कमावानमां प्रवेश थाय एवा कौर्ठ पथ जतना व्यापारे करीने देव द्रव्यनी वृद्धि करी नही” आ प्रभाषे क्लां छतां धर्षे स्थानके अथवा विपरीत आयरण्य दृष्टिए पडे छे. शास्त्रकारतो रूपक रीते कहे छे के—

**आणाखंडणकारी जडवितिकालं महा विभुइए ।**

**पूरेऽवीयरायं सञ्चार्पिनिरथ्ययं तस्य ॥**

भावार्थ—आतुनो भांडन करवावाणो जे के त्रप्य काळने विषे भेटी संपदावडे करीने वीतराग देवने पूने तोपथु ते सधणुं निरथेक छे.

अने तेटलाज भाटे क्खुं छे के—

**एगोसाहू एगासाहूणी सावओवि सहीवा ।**

**आणा जुचो संघो 'से सो' पुणअट्ठि संघाओ ॥**

भावार्थ—ओङ साधु, ओङ साधती, ओङ शान्त अने ओङ अतीका पथ ने जिशाचे सुक्त अर्थात् जिनासा मुज्ज्यं वर्तनारा हेय तेने थतु..

લોભ.

૧૫૬

મિથ સંધ કહીએ આકી જિતાણા રહિત શેષ ને હોય તે બધો અસ્થિનો  
સંધ\* સમજવો.

ઉપર અતાખ્યા પ્રમાણે જૈન ભાગમાં આરૂપી અતિશય પ્રાચીન્યતા  
અતાવેલી હોવાથી જિતપૂળ, તીવ્યાત્રા, સ્વામીવત્સળ, સામાયક, પ્રતિકભ-  
ણ, પૈષધાદિ સર્વે ધર્મ કૃત્યો જિતાણા પ્રમાણેજ કરવાનો ઉદ્ઘમ કરવો. જેથી  
તેના યાયાં ઇણની પ્રાપ્તિ થઈ શકે અને જિતરોત્તર સહગતિને પાણને ભ-  
વભવતે વિષે વૃદ્ધ પાગતી ધર્મકિયાએ. કરીને યાવત મોક્ષ સુખની પ્રાપ્તિ  
થઈ શકે.

તથારતુ.

## લોચ.

આ સંસારને વિષે પ્રાણીને ભવ અભિષ્ટ કરવામાં સુષ્પ્ય હેતુભૂત “લોચ”  
છે. કારણ કે લોલી ગતુષ્ય અનેક પ્રકારના પાપાચરણ આચરે છે. અઠારે  
પાપરથાનક શેવે છે અને પ્રાંતે દુર્ગતીને વિષે જાય છે. સહગતિને ઈચ્છ-  
નારા ગતુષ્યોએ મેળેલી લક્ષ્મિભૂતિ તૃપ્તિ પામીને ઈચ્છાનું પ્રમાણું કરું  
નેઈએ. કેમકે નેને લોચ દ્વારા પ્રાપ્ત યાય છે. તે પ્રાણી ગમે તેથું દ્વંદ્વ  
મળે તોપણ સંતોષ પામતો નથી. શાસ્ત્રકાર કહે છે કે.—

વનિહસ્તૃપ્યતિનેધનैરિહયથાનાંભોમિરંભોનિધિ ।

સ્તદ્રન્મોહઘનોધનैરાપિધનैર્જતુર્નસંતુષ્યતિ ।

ન ત્વેવંમનુતેવિમુચ્યયવિમબવંનિઃશેષમન્યંભવં ।

યાત્યાત્માતદહંમુધૈવવિદ્ધામ્યેનાંસિભૂયાંસિકિં ॥

ભાવાયદ—આ લોકને વિષે ધણ્યા કાણ્ટોએ કરીને પણું જેગ અજિ તુ-  
પ્તિ પાગતો નથી અને ધણ્યા પાણીએ કરીને પણું જેમ સમુદ્ર તુસ થતો  
નથી તેમ મેછે કરીને બ્યામ એવો પ્રાણી પણું ધણ્યા દ્વંદ્વે કરીને પણું  
સંતોષ પાગતો નથી. વળી તે એમ પણું નથી વિચારતો કે આ સંસારને  
વિષે પ્રાણી સમરસ વૈમબ ને લક્ષ્મિ તેને છેડીને પરભવમાં ગમત કરે

\* હાડકાનો સમુદ્દ.

૧૬૦

## શ્રી કૈતિયસે પ્રશ્નાદ.

છે તો હું દ્વાગટન વણ્ણા પાણ કાંઈ કરું છું? જાણું, આંદોલન પણ એ હી રીતે થા માટે ચર્ચાકાદ જાદુન એકન કરું છું. કેમકે કરેલા પણ પતો ભારે એકલાનેજ જોગવા પડશે; આંતે લદિમ તો હું સુધીને ચાલ્યો, જરૂરિયા તેને તો ભારી પાછળ નેના ભાગ્ય હશે, તે જોગવશે.

લદિમ સંચય કરવામાં બે સુખાર હુંખને સફાન કરતાર થાંતો તેનો વિષ કરવામાં અતિશય દૃપણું ઓવા ભમણું હેઠું દ્વારા કોણી ગતુષ્ણની દુર્દીશા દેખાવા માટે આ નીચે લખ્યું છે.

મહેષ દેશને વિષે રાણગુણી નગરીમાં એચિફ નામે રાજ છે તેની ચેલણું નામે રાણી છે એકદાં પ્રસ્તાવે ભાદ્રપદ માસે ચેલણું રાણી રાજ ની સાથે જોગમાં બેઠા થાં વેભારગિરી સામું જોવા લાગ્યા. ભાઈ રાનીનો વખત છે, જરૂર જરૂર વરસાદ વરસે છે, પર્વતગાંધી આનેક નિભરણું વઢી રહ્યા છે, હાં હામ દરુરના શાંદ અનુષ્ણું પડે છે, બર્પેયા લોલ્યા કરે છે, નથીને વિષે પણ દાઈ પાણી સમાતા નથી, વીજળીના જ્યાકારા થયા કરે છે, તેવાં સમયમાં મહાદેવ કરાને નથીના પ્રભાદમાંથી કાણને જેચેતા ડેઈક પૂર્ણે ચેલણું રાણીએ વિદુતનાં પ્રકાશવડે હિંદો, તેથી મનમાં વિધાદાંકરતી રાજ પ્રત્યે બોલી કરું સ્વામીનું.

ભરિયાને સંહુડી ભરે, પૂર્ણ વરસે મેલ;

સધના સનેહા સહુ કરે, નિર્ધિન રામે છેદ.

ઓ ઉખાણો ને નગરીમાં કહેવાય છે તે સાચો છે. રાજનો મુશ્યું કે કેમ? તે વારે રાણગુણી કહું કે હે સ્વામી! જુઓ આંતે લાયકર વખતે પેટો ગતુષ્ણ મહા કષ્ટ કરીને નન્દિના પ્રનાહમાંથી કાણ આંકર્યું કરે છે તેથી જખાયા છે કે ઓક દરિદી પૂર્ણ છે, અને તેને ઉત્તર ભરણું હુંસે છે, જોણ પરમને પૂર્ણ કર્યું જણાતું નથી. માટે તમે સર્વેતે દાન આપો છો પણ ઓવા હુંખને કેમ ચાપતા નથી? આ વાત સાંભળોને રાજનો તરતજ શેષક મોકદીને તેને તેણુંને! તે પણ આરી નગરસ્થર કરીને હરો રહ્યો, રાજને કહું કે “હે પૂર્ણ તું હુંખની થઈને આવે વખતે કાણાંકર્યું કરેં છે માટે તું હુંખ નહીં જોગવ, તારે જેઠણે તે હું આપું.” તેણું કહું કે હે સ્વામી હું ભમણું નામે ચાણીયો છું.

(આપુણું.)

શ્રીમતુચૂચ-શાલમગનદાલ મેળા પથંદ ત. દાદોભાઇ દસપત્રભા.

શ્રી વીરમગામ - માસ્કર રત્નચંદ મુળચંદ.

શ્રીમતુચૂચ-દર્શનલભાગનદાલ અદ્ધ્યંદ રાજી મેહેતાનીએટા.

,, રા. રા. નથુભાઇ રત્નચંદ અંગલો. વર્ણાકુલર પ્રીન્દીંગ રેસ  
શ્રી જામનગર - ચડીલ ચન્દલજ ગોવીદલુ.

દી અમરેલી - શાઠ વીચંદ છુવાભાઇ.

શ્રી કપડચંદ - પરી, બાલાભાઇ પીચલચલપલ.

શ્રી અહુવા - શા. ચાંડલાલ આણંદશુ.

શ્રી એડન - શા. સુંદરલુ હથચંદ.

શ્રીવોરાજ - શા. જાલવળ રવળ. ડે. શા. બાલા લાણુણી દુકાને.

### જોહેર ખખર.

શ્રી વછરાજનો રાસ કિંમત છ આના.

શ્રી બારેજાળાણા યતિ ઝુષભાવિજ્યલુ કૃત ચાર ખંડ અને  
પદ દાણે સંશુદ્ધ વાંચનારના મનને રસ ઉત્પેન કરે તેવો નીચે  
સાહો કરનાર તરફથી છપાઈને દુંડી મુદ્રામાં બહાર પડશે. જેઠાએ  
તેણું પત્રદ્વારા અખર આપવી, પાછળથી કિંમત વધારે બેસદો.

શ્રી જૈન બાળોદ્ય સલા તરફથી  
વાડીલાલ ઓધડ વહોરા.

સુ. બારેજા.

### નવી ચોપડીઓની જોહેર ખખર.

અમારી ઓદ્દીસમાં વેચાણું અળતી (૧૬૭) લુકોણું કિંમત  
સહીત લીસ્ટ છપાવીને બહાર પાડેલ છે અને આહેંતે વહે-  
ચલ છે. જેઠાએ તેણું પત્ર લાભીને મંગાવણું, તેમાં લખ્યા શિ  
લાયની નવી લુકોણી વિગત.

१ अशोदिपना नक्षा विग्रेनी हुकीत. (नक-	
२ शास्त्रो युक्त.) २—७—०	
३ श्री शत्रुघ्न्यना नक्षा (रंगीत कपड़ा साथ.) १—०—०	
४ श्री आयुज्ञना नक्षा (रंगीत कपड़ा साथ.) ०—५—०	
५ श्री जैन कल्पवृक्ष [रंगीत कपड़ा साथ] नक्षल-	
हृष्णुथी पद्मावणी) १—४—०	
६ मुनीराज श्रीआत्मारामल कृतपुज्ञम्भविग्रेनी०—४—०	
७ रत्नासार कुमारन् चरित्र. (भुज २सीक.) ०—४—०	
८ नवं जैन पञ्चांग (संवत् १६४६ ना चैत्ररथी	
१६४७ ना इगण्डु सुधा) ०—१—०	
९ नव स्मरण भूग (शास्त्री अक्षरनी) ०—४—०	
१० कृष्णमत सभीक्षा. ०—१०—०	
११ भिक्षा प्रचार. ०—२—०	
१२ भ्रातःस्मरण भगवापाठ. ०—०—६	
१३ पुष्ट्याद्य चरित्र लापांतर. ०—४—०	
१४ स्थोरावणी चरित्र. (पथपंथ) पुंड्र वांचेल. १—२—०	
१५ श्री पञ्च प्रतिक्रिया सूक्त स्तवनो विग्रेनी सहीत. १—४—०	
१६ श्री लिङ्गायत्रल वर्णन. ०—६—०	
१७ सुट्पटेशमाणा (निति संपूर्णी सही उथाम्भा) ०—१२—०	
१८ भिक्षा प्रचार (शास्त्री अक्षरनी) ०—१—०	

प्रास्त्रेश लुहु ऐसरो.

सर्वे जैन बंकुम्भेने अपरथ अरीद करवा लायक.

चरितावणी अथवा जैन कथा संग्रह.

मुंहर रसिक अने भाटी भाटी कथाओंतु लापांतर करी कुरावीने एह लुक तैयार करवामां आवी छ. हाल सूक्ष्मी जैनधर्मी नी आवी केहि पछ लुक छपायेल नथी. विशेष वर्णन प्रथमथी शुं कर्वु? पुस्तकना पृष्ठ आ चोपानीया जेवडा लगलग उछप थरो. पाका पुंड्राथी अंधाशे, किंभत प्रथमना आहुक्ने भाए इ ११ शाखनामां आवी छ. पाण्डाथी वधारे ऐसरो. प्रास्त्र अर्थ लुहु.